वार्षिक गृह पत्रिका - 2009

सी डैक
CDAC

आई टी पेशावरों के लिए स्वास्थ्य ज्ञान

टेली-मेडीसन-सरल स्वास्थ्य सुधारक

सामाजिक नेटवर्किंग

साईबर सुरक्षा का महत्व

बहुभाषीय प्रौद्योगिकी विभाग की परियोजनाएँ

हिन्दी हमारा अधिकार

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

पुस्तकालय LIBRARY 16/9/10

सूत्रपात

प्रगत संगणन विकास केन्द्र,मोहाली

प्रगत संगणन विकास केन्द्र

उत्कृष्टता के

20

साल

1989-2009

मोहाली

सूत्रपात

(वार्षिक गृह पत्रिका)

प्रगत संगणन विकास केन्द्र
पुस्तकालय
LIBRARY
16/9/10
Centre For Development Of Advanced Computing

इस अंक में

कार्यकारी निदेशक की कलम से

श्री जगजीत सिंह भाटिया
कार्यकारी निदेशक एवं अध्यक्ष
(राजभाषा कार्यान्वयन समिति)

सम्पादकीय

दीपक राणा
जन सम्पर्क एवं हिन्दी अधिकारी

सम्पादक मंडल

१ सुनीत खेतरपाल
२ शैलेश सिंह
३ अनु आहुजा

सहयोग

१ सुषमा कौशल
२ राज कुमार

निशुल्क वितरण के लिए

नोट :– प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक एवं सूत्रपात संपादक मंडल की पूर्व अनुमति लेना आवश्यक है । सूत्रपात में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण लेखक के अपने हैं । सम्पादक मंडल का सबसे सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

सूत्रपात

वार्षिक राजभाषा गृह पत्रिका

अंक (क)	अनुक्रम
संदेश	कार्यकारी निदेशक की कलम से
	सम्पादकीय

अंक (ख)	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
१.	प्रगत संगणक विकास केन्द्र सी–डैक मोहाली	१
२.	बहुभाषीय प्रौद्योगिकी विभाग की परियोजनाएँ	२
३.	संविधान में राजभाषा	५
४.	भारत, भारतीय बच्चे और हिन्दी	६
५.	पदनाम तथा विभागीय नाम	८
६.	प्रशासन शब्दावली	९
७.	साईबर सुरक्षा का महत्त्व	१०
८.	विविध गतिविधियां	१२
९.	सामाजिक नेटवर्किंग	१४
१०.	सत्य तथ्य	१५
११.	महत्त्वपूर्ण आविष्कार	१६
१२.	सोच की प्रतिक्रिया	१७
१३.	फलसफा जिंदगी का	१९
१४.	ओबामा को नोबेल... बापू मुस्करा रहे हैं	२०
१५.	सहयोगी एवं प्रोत्साहित व्यवसायिक वातावरण	२२
१६.	मन की सुन्दरता	२३
१७.	सबकी कहानी मेरी जुबानी	२४
१८.	एक सवाल खुद से	२५
१९.	अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	२६
२०.	आओ मिलकर प्रदूषण घटायें	२७
२१.	मनशक्ति	२८
२२.	महान विचार	२९
२३.	विचित्र तथ्य	३०
२४.	भगवान को भाता भक्ति भाव	३१
२५.	आई–टी पेशेवरों के लिए स्वास्थ्य ज्ञान	३२

कार्यकारी निदेशक की कलम से

सी–डैक मोहाली,संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय भारत सरकार की एक वैज्ञानिक संस्था है । इसकी स्थापना मई सन् १९८९ में हुई थी । यह संस्था पहले इलेक्ट्रोनिकी डिज़ाईन एवं प्रौधोगिकी केन्द्र के नाम से जानी जाती थी ।

पिछले २० वर्षों से सी–डैक मोहाली ने अनुसंधान एवं विकास प्रणाली में जनशक्ति तैयार करने में अपार विशेषज्ञता प्राप्त की है। इस केन्द्र ने अपने महत्त्वपूर्ण अनुसंधान एवं विकास क्षेत्रों में कई परियोजनाएँ और उत्पाद बनाए हैं जैसे कि बहुभाषी संगणन, सोफ्टवेयर प्रौधोगिकी, व्यवसायिक इलेक्ट्रोनिक्स, साईबर सुरक्षा। यह केन्द्र स्वास्थ्य सूचना विज्ञान से सम्बन्धित कई महत्त्वपूर्ण गतिविधियों पर भी कार्य कर रहा है।

अनुसंधान एवं विकास के अलावा यह केन्द्र शिक्षण और प्रशिक्षण परामर्श और सेवाएँ भी कुशलता से प्रदान कर रहा है । केन्द्र में विभिन्न क्षेत्रों में आधुनिक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम करवाए जाते हैं । पिछले २० वर्षों की अवधि में लगभग १००० पाठ्यक्रमों के अन्तर्गत ३०,००० से ज्यादा विद्यार्थी प्रशिक्षण ले चुके हैं । केन्द्र में राजभाषा हिन्दी के विकास के लिए समय–समय पर कई प्रयास होते रहते हैं । अपने संस्थान की गृह पत्रिका 'सूत्रपात' का प्रथम अंक के माध्यम से आप सबको सम्बोधित करते हुए मैं गर्व और हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ । राजभाषा हिन्दी के विकास के लिए यह हमारा सामूहिक प्रयास है ।

–जगजीत सिंह भाटिया

सम्पादकीय

इस सूचना एवं प्रौद्योगिकी के युग में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग करने में भले ही कुछ कठिनाईयां आ रही हों, परन्तु दिनों–दिन हिन्दी के पाठकों की संख्या में वृद्धि हो रही है । अपनी भाषा में कही गई कोई भी बात एवं सूचना ज्यादा गहराई तथा सूक्ष्मता से अर्थ प्रदान करती है । अतः कर्त्तव्यनिष्ठा से, आत्मविश्वास एवं दृढ़ता की भावना से हिन्दी भाषा के प्रचार तथा प्रसार का संकल्प लेना आवश्यक है । भारत सरकार भी राजभाषा हिन्दी के विकास करने हेतु विभिन्न प्रयास करती रहती है ताकि हिन्दी भाषा की विश्व स्तरीय छवि को बरकरार रखा जा सके ।

सी–डैक मोहाली का अपनी वार्षिक गृह पत्रिका प्रकाशित करने का यह प्रथम प्रयास है । कई लोगों का यह मानना है कि इस सूचना प्रौधोगिकी के युग में अंग्रेजी के बिना वैज्ञानिक क्षेत्र में विकास करना कठिन है। इन्टरनेट, मोबाइल, प्रिंट और इलेक्ट्रोनिक्स मीडिया में हिन्दी भाषा का दिनोदिन बढ़ता प्रभाव देखा जा सकता है। समय की मांग है कि इस ऐतिहासिक हिन्दी भाषा को गौरवपूर्ण बनाए रखने के लिए हम अपने प्रभावशाली प्रयास जारी रखें । सी–डैक, मोहाली का हिन्दी गृह पत्रिका "सूत्रपात" का प्रकाशन अधिकारियों एवं कर्मचारियों का एक सामूहिक प्रयास है। विश्वास है कि आप सभी का सहयोग मिलता रहेगा।

गृह पत्रिका को राजभाषा के प्रयोग की दृष्टि से अधिक उपयोगी बनाने के लिए प्रिय पाठकों के सहयोग व उनके प्रगतिशील सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी जिससे पत्रिका के अगले अंक को और आकर्षक बनाया जा सके।

दीपक राणा
जन सम्पर्क एवं हिन्दी अधिकारी

प्रगत संगणक विकास केन्द्र, मोहाली

प्रगत संगणक विकास केन्द्र सी–डैक (पूर्व इलेक्ट्रोनिकी डिज़ाइन प्रौद्योगिकी केन्द्र) की स्थापना मई १९८९ में संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा की गई ।

सी–डैक,मोहाली सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग का आई–एस–ओ ९००१–९००२ प्रमाणित पहला केन्द्र है । यह केन्द्र दूरसंचार, नेटवर्किंग, बहुभाषी, मल्टीमीडिया, बायोमेडिकल, साइबर सिक्योरिटी तथा सूचना प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों में उच्च स्तरीय प्रशिक्षण देने की क्षमता रखता है । इन सभी प्रशिक्षणों के पाठ्य–क्रम आई–टी क्षेत्र की जरूरतों को मद्दे नज़र रखते हुए समय–समय पर विकसित किए जाते हैं। पिछले दो दशकों से यह केन्द्र मानव प्रशिक्षण कार्यक्रमों में अपनी विश्वस्तरीय छवि कायम रखी है।

उत्पाद डिजाइन प्रौद्योगिकी एवं वी एल एस आई में एम टेक और अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्र में यह केन्द्र एक महत्वपूर्ण इकाई के रुप में उभरा है और निम्न क्षेत्रों में अनुसधान एवं विकास के ऊपर प्रयास जारी है ।

– बहुभाषी विरासत और कम्प्यूटिंग
– व्यवसायिक कम्प्यूटिंग वी एल एस आई और एम्बैडेड सिस्टम
– सोफ्टवेयर प्रौद्योगिकी और सोफ्टवेयर मुक्त स्रोत
– साइबर सुरक्षा और साइबर फोरेनसिक
– स्वास्थ्य सूचना विज्ञान

सी–डैक मोहाली विभिन्न क्षेत्रों में सफलता पूर्वक सोफ्टवेयर उत्पाद बना चुका है जिनमें स्वास्थ्य देखभाल के लिए संजीवनी और ई–संजीवनी, भारत सोफ्टवेयर सल्यूशन जिसे स्कूल–कॉलेज तथा अन्य संस्थानों की कुशल कार्यवाही के लिए, हनीनेट सोफ्टवेयर साईबर सुरक्षा के लिए, आर. एफ. डी. आई. आधारित प्रणाली विभिन्न विभागों के लिए और इसी तरह के अनेक सोफ्टवेयर प्रदान कर चुका है जो कि पंजाब सरकार तथा अन्य राज्य सरकारों के लिए अत्यन्त लाभकारी साबित हो रहे हैं।

सी–डैक, मोहाली में मानव संसाधन के विकास के लिए आई–टी क्षेत्र में जरूरत मंद सभी बुनियादी सुविधाएँ उपलब्ध हैं जिसमें स्मार्ट कक्षाएँ, ऐनिमेशन और मल्टीमीडिया प्रयोगशाला, बहुभाषी प्रयोगशाला, साइबर सुरक्षा प्रयोगशाला, डिजिटल इलैक्ट्रोनिक प्रयोगशाला , प्रोटोटाईप विकास प्रयोगशाला तथा कई अन्य प्रयोगशालाएं भी आई–टी की पूर्ण जरूरतों के आधार पर उपलब्ध हैं । केन्द्र के पुस्तकालय मे आई–टी सम्बन्धित ६००० से ज्यादा पुस्तकें और १८० से ज्यादा पत्रिकाएँ देखी जा सकती हैं। १०० से ज्यादा व्यक्तियों के बैठने की क्षमता युक्त प्रेक्षागृह, आधुनिक सुविधाओं से युक्त और लड़के लड़कियों के लिए अलग–अलग छात्रावास जैसी सुविधाएँ उपलब्ध कराने के साथ सी–डैक मोहाली ने अपना राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर बनाए रखा है ।

बहुभाषीय प्रौद्योगिकी विभाग की परियोजनाएँ

इक्कीसवी शताब्दी सूचना युग की शुरूआत मानी जा सकती है आई–टी क्षेत्र के तीव्र गति से हो रहे विकास ने जीवन की हर कार्यशैली में परिवर्तन ला दिया है । इस परिवर्तन ने हर प्रकार की सूचना व जानकारी को आसानी से आम आदमी को उपलब्ध करवा दिया है । किसी भी विषय पर जानकारी वैश्विक दर्शकों तक आसानी से पहुँचाई जा सकती है।

मानव संचार सूचना समाज का आधार है। भारतीय उपमहाद्वीप जैसे बड़े बहुभाषी क्षेत्र में पूर्ण रूप से सूचना के आदान प्रदान को भारत में और भारतीय सीमाओं के पार पहुँचाने के लिए बहुभाषी प्रौद्योगिकियों की आवश्यकता है ।

पिछले कुछ वर्षों के दौरान अनुसंधान और औद्योगिक स्तर पर भाषा और संचार प्रौद्योगिकियों के विकास में इंटरनेट के प्रचार और प्रसार के कारण, मोबाइल संचार की सफलता और भाषा आधारित प्रौद्योगिकियों में प्रगति के कारण तेज़ी से वृद्धि हुई है ।

निरंतर हो रही प्रगति के चलते बहुभाषी भाषा प्रसंस्करण एवं अंतरभाषाई सूचना का प्रयोग और मानव –कम्प्यूटर इन्टरैक्शन की अत्यधिक आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त बहुभाषी प्रौद्योगिकी क्षेत्र में बढ़ती हुई आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नई विशेषताएँ, कौशल और व्यवसायिक प्रोफाइलज़ के मानव संसाधन की ज़रूरत है ।

सी–डैक कम्प्यूटर पर भारतीय भाषाओं के विकास और प्रयोग में अग्रणी रहा है । सी–डैक मोहाली बहुभाषी अनुप्रयोगों की विस्तृत श्रृंखला के विकास में शामिल है । सी–डैक अपने बहुभाषी संगणन कार्यों की दिशा में इसी ध्येय प्राप्ति की ओर अग्रसर है कि भारतवर्ष की कुल आबादी अपनी देसी भाषा में कम्प्यूटरों का प्रयोग करने में समर्थ हो । बहुभाषी संगणन और संबंध क्षेत्र में या तो प्रचलित तकनीकी तथा टूल्स में उन्नति हेतु काम किए या फिर नये उन टूल्स का निर्माण किया जिनकी भारत के आई टी में ज़रूरत है । इसी उद्देश्य को लेकर सी–डैक मोहाली द्वारा निर्मित बहुभाषीय सॉफ्टवेअर, वेबसाईट एवं इस क्षेत्र में सम्पादित की गई महत्त्वपूर्ण गतिविधियों के सिंहावलोकन पर यहां वर्णन किया जा रहा है ।

अंग्रेज़ी–पंजाबी सूचना प्रौद्योगिकी शब्दावली

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी जीवन के हर पथ पर अपना प्रभाव दिखा रही है। पंजाबी प्रयोगकर्ताओं के बीच सूचना प्रौद्योगिकी को प्रोत्साहित करने के लिये "सूचना प्रौद्योगिकी शब्दावली" पंजाबी भाषा में विकसित करने की ज़रूरत महसूस की गई । इस परियोजना के अन्तर्गत पंजाबी में आई–टी शब्दों की एक मानकीकृत शब्दावली विकसित करने का कार्य हाथ में लिया गया जिसे इन्टरनेट पर प्रकाशित किया गया है।

भाषावली – अंग्रेज़ी –पंजाबी भाषा अनुवादक

अंग्रेज़ी–पंजाबी भाषा अनुवादक इन्टरनेट पर प्रयोग की जाने वाली सुविधा है जिसमें सूक्ष्म अक्षित संरचना का प्रयोग किया गया है, जिसमें पूरा कार्य सर्वर तथा क्लाइंट दोनों पर सम्पन्न होता है। भाषावली अपने परियोजना में संयोजित सभी साधनों को आदान–प्रदान करके अनुवाद करता है। आज और कल तात्कालिक व्यवस्था में अंग्रेज़ी तथा पंजाबी भाषा के लिये कार्यरत है परन्तु अगले चरण में यह परियोजना अन्य भारतीय भाषाओं के लिये भी उपलब्ध होगी ।

राज्य सरकारों के दफ्तरों में क्षेत्रीय भाषा को प्रोत्साहित तथा विकसित करने के लिये यह परियोजना अत्यंत कारगार सिद्ध होगी । भाषावली में उपयुक्त तथा तीव्र उत्पाद या परिणाम के लिए उच्च तकनीकी तथा साधनों का प्रयोग किया गया है ताकि यह सभी प्रयोगकर्ताओं के लिये सहायक हो ।

भाषावली में विशिष्ट एवं बहुविकल्पीय शब्दावली तथा व्याकरण का प्रयोग है ।

भाषावली के निम्नलिखित गुण होंगे :–

1. इन्टरैक्टिव ग्रैफिकल यूज़र इन्टरफेज़
2. तीव्र एवं आदर्श अनुवादक
3. अक्षर विन्यास जांचकर्ता
4. सिमैन्टिक तथा सिन्टैक्टिक अनुवाद
5. अनुवादित वाक्यों को ई–मेल द्वारा भेजने की सुविधा

फुलकारी (विन्डोज़ आधारित रचनात्मक स्वरूप के साथ कढ़ाई)

इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य ऐसी व्यवस्था तैयार करना है जिसे फैशन जगत में व्यवसायिक तथा अव्यवसायिक दोनों प्रकार के प्रयोगकर्ता आसानी से प्रयोग कर सकते हैं।

फुलकारी भारत के विभिन्न भागों के प्रसिद्ध पहनावे को पारम्परिक रूप देते हुये और भी निखार देकर नये रूप में प्रदर्शित करने का एक साधन है । प्रयोगकर्ता इस परियोजना के अन्तर्गत बनाए गए उत्पाद को कपड़े पर रूप देने से पहले देख सकता है। यदि वह अपने द्वारा बनाए गए

रूप में कुछ बदलाव करना चाहता है या फिर उसका प्रयोग किसी और जगह करना चाहता है तो वह ऐसा कर सकता है ।

प्रथम चरण : फुलकारी प्रयोगकर्ता मित्रवत अंतराफल है, यह पंजाबी व अंग्रेज़ी भाषा सहायक है। अगले चरण में अन्य भारतीय भाषाओं में भी उपलब्ध होगा ।

इस उत्पाद में बनाए गए रूपों को कई कोणों पर घुमाना, एक तरह के कई रूपों का निर्माण करना, अर्ध्व और क्षैतिज दोनों तरह से रख सकते हैं। निर्माण की गई आकृति को कई तरह की फाइलों में संयोजित करने का भी प्रावधान किया गया है जैसे कि डाट पी.एन.जी., डाट जे.पी.जी. इत्यादि । अगले चरण में भारत की अन्य कढ़ाइओं को, जैसे सिंधी, कश्मीरी, चिकनकारी इत्यादि, भी इसी तरह की परियोजनाओं के अन्तर्गत विकसित करने का प्रावधान है ।

सी–डैक मोहाली वेबसाइट

सी–डैक मोहाली बहुभाषीय विभाग संस्था की अग्रणी है जिसे विभिन्न भाषाओं में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है । सी–डैक मोहाली द्वारा निर्मित कुछ परियोजनाओं में जर्मन, हिन्दी, अंग्रेज़ी व पंजाबी भाषा का प्रयोग किया गया है । स्वंय सी–डैक मोहाली की वेबसाइट पंजाबी व अंग्रेज़ी भाषा में है ।

सुनीत खेतरपाल
वरिष्ठ अभिकल्प अभियन्ता

संविधान में राजभाषा

भारत का संविधान

भाग–१७

राजभाषा

अध्याय १ – संघ की भाषा

अनुच्छेद

३४३ संघ की राजभाषा।

३४४ राजभाषा के सम्बन्ध में आयोग और संसद की समिति।

३४५ राज्य की राजभाषा या राजभाषाएं।

३४६ एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच या किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा।

३४७ किसी राज्य की जनसंख्या के किसी भाग द्वारा बोली जाने वाली भाषा के संबंध में विशेष उपबंध।

३४८ उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों में और अधिनियमों, विधेयकों आदि के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा।

३४९ भाषा से सम्बन्धित कुछ विधियां अधिनियमित करने के लिए विशेष प्रक्रिया।

३५० व्यथा के निवारण के लिए अभ्यावेदन में प्रयोग की जाने वाली भाषा।

३५१ हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश।

भारत, भारतीय बच्चे और हिन्दी

भारत देश की संस्कृति विविध एवं समृद्ध है और हम जानते हैं कि भारतीय संविधान के अनुसार हिन्दी हमारी राजभाषा है। हमारे देश में सौ से भी अधिक भाषाएँ अथवा बोलियाँ बोली जाती हैं जिन्हें देश की भाषा कहा जा सकता है परन्तु फिर भी एक राजभाषा का होना जरूरी है जिससे देशवासियों में एकता की भावना का बोध हो, लोग आपस में संवाद कायम कर सकें। ऐसी ही एक भाषा की जरूरत हर देश को होती है और हिन्दी हमारी मातृभाषा है जो सम्पूर्ण भारत को एक सूत्र में पिरोती है, इसी कारण इसे संविधान में हमारी राजभाषा का दर्जा हासिल है।

हमारे संविधान निर्माताओं ने भी यह महसूस और स्वीकार किया था कि हिन्दी ही हमारी राजभाषा हो सकती है क्योंकि यह सर्वाधिक राज्यों में बोली जाती थी। लेकिन संविधान के ५६ वर्ष बीत जाने पर भी हिन्दी की तरक्की उतनी नहीं हो पाई। आज भी हम सैंकड़ों सालों तक राज करके गए अंग्रेजों की भाषा अंग्रेजी पर निर्भर हैं। अगर हम इस आधुनिकता और गला काट प्रतियोगिता में सुरक्षित स्थान हासिल करने के लिए अगली पीढ़ी को अंग्रेजी सिखाएं तो कोई परेशानी नहीं परन्तु ऐसा हिन्दी की कीमत पर हो तो वह देश के लिए नुकसानदेय है। हमें इस बात को भी ध्यान में रखना होगा कि कोई भी भाषा सिर्फ भाषा नहीं होती अपितु उसे बोलने और व्यवहार में लाने से देश की संस्कृति की झलक भी प्रकट होती है। यदि हमारी भावी पीढ़ी हिन्दी को बोलने और समझने में ही कठिनाई अनुभव करेगी तो वे भारतीयता और भारत के गौरव को कैसे समझ पाएगी। आमतौर पर किसी भी देश की गौरवगाथाएं वहीं के निवासियों द्वारा स्थानीय भाषा में लिखी या कही जाती हैं इसलिए अगर मातृभाषा का ही ज्ञान नहीं होगा तो उसे देश के गौरव और संस्कृति को समझना नामुमकिन होगाय और हां अगर कोई किसी देश की संस्कृति को ही नहीं समझेगा तो उसके मन में उस देश के प्रति प्रेम और गर्व की अनुभूति कैसे होगी? इसलिए देश की आत्मीयता एवं समृद्धता को समझने के लिए उस देश की राजभाषा/मातृभाषा का अच्छा ज्ञान होनाभी जरूरी है।

हमारे देश में हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जिसे जानने वाले कश्मीर से कन्याकुमारी तक मिलते हैं इसलिए हिन्दी ही वह भाषा है जिससे हम अपने देश को भली–भांति जान सकते हैं। ऐसा नहीं कि भारत की अन्य भाषाएं यह काम नहीं कर रहीं या ऐसा करना उनके लिए संभव नहीं है लेकिन मैं यहां पर एक ऐसी भाषा की बात कर रहा हूँ जो हमारी राजभाषा है और सारे देश में प्रसारित होती है।

हिन्दी की वर्तमान परिस्थिति को आज हम निराशाजनक तो नहीं कह सकते परन्तु आज जिस प्रकार बड़े शहरों के अंग्रेजी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों से बात करने पर अहसास होता है कि जो बच्चा आज उनतीस, उनतालिस, उनचास, उनसठ, उनहतर, उनासी को समझ नहीं पाता तो वह आगे चलकर अपने आम देशवासियों से कैसे बात कर पाएगा ? कैसे वह अपने लोगों से संवाद कायम कर सकेगा ? कैसे वह अपने देश के गौरव को पहचान पाएगा ? इसलिए हमें अपनी भावी पीढ़ी को अग्रेंजी के साथ–साथ अपनी राजभाषा/मातृभाषा को भी अच्छी तरह से सिखाना होगा। इसलिए अभी भी समय है कि हमें बिना किसी भेदभाव से दूर रहकर हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए काम करना होगा ताकि हमारी राजभाषा हिन्दी और समृद्ध एवं सशक्त हो।

हम प्रतिवर्ष १४ सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाते हैं। सरकारी विभाग, कार्यालय और शैक्षणिक संस्थाएँ भी १४ सितम्बर के दिन हिन्दी दिवस, हिन्दी सप्ताह अथवा हिन्दी पखवाड़ा मनाते हैं। दो चार प्रतिस्पर्धाएँ और एक दो भाषण प्रतियोगिताएँ कर लेते हैं। हिन्दी अधिकारी के अनुरोध पर विभाग के कर्मचारीगण इन कार्यक्रमों में भाग लेते हैं और छोटे मोटे पुरस्कार/उपहार दिए जाते हैं, जलपान के साथ कार्यक्रम की समाप्ति हो जाती है और फिर हिन्दी दिवस का बस्ता अगले हिन्दी दिवस तक के लिए ताक पर रखदिया जाता है। इस प्रकार के हिन्दी दिवसों को कई सौ वर्षों तक मनाने से भी हिन्दी का हित नहीं होगा, हिन्दी की स्थिति ज्यों की त्यों बनी रहेगी। अतएव हिन्दी दिवस के साथ–साथ हिन्दी के विकास के लिए, जनचेतना की अभिवृद्धि के कार्यक्रम करने चाहिए ताकि हिन्दी और सही तरीके से तरक्की करे। हमें हिन्दी को प्रत्येक भारतीय के मूल में उतारना होगा।

हिन्दी के विकास के लिए बढ़–चढ़ कर योगदान करें और नित्य प्रतिदिन प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हो रहे बदलाव के अनुरूप हिन्दी को भी ढालने का प्रयास करें ताकि भावी पीढ़ी को हिन्दी को समझने और बोलने में कठिनाई का अनुभव न हो।

"हिन्दी ही है इस देश का मूल,
क्यों रहे हम इसको भूल ?
चाहे जो भी हों जहान के उसूल,
हिन्दी खिलती रहे बनके फूल ।।"
हिन्दी खिलेगी जब बनके फूल
तब छंट जाएगी अनेकता की धूल ।
जब हिन्दी ही होगी अपना उसूल
तब पहचानेंगे हम भारतीयता का मूल ।।

पदनाम तथा विभागीय नाम

Accountant	लेखाकार
Accountant General	महालेखाकार
Accounts Officer	लेखा अधिकारी
Additional Commissioner	अपर आयुक्त
Additional Secretary	अपर सचिव
Administrative Officer	प्रशासनिक अधिकारी
Administrator	प्रशासक
Adult Education Officer	प्रौढ़ शिक्षा अधिकारी
Advocate General	महा अधिवक्ता
All India Institute of Medical Sciences	अखिल भारतीय आयुविज्ञान संस्थान
All India Radio	आकाशवाणी
Anti Corruption Branch	भ्रष्टाचार निरोध शाखा
Anti Corruption Officer	भ्रष्टाचार निरोध अधिकारी
Assistant Development Officer	सहायक विकास अधिकारी
Bureau of Indian Standards	भारतीय मानक ब्यूरो
Census Officer	जनगणना अधिकारी
Central Board of Secondary Education	केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
Chief Administrative Officer	मुख्य प्रशासनिक अधिकारी
Chief Editor	मुख्य संपादक
Chief Electoral Officer	मुख्य निर्वाचन अधिकारी
Chief Engineer	मुख्य अभियन्ता
Chief Manager	मुख्य प्रबंधक
Design Engineer	अभिकल्प अभियन्ता
Director	निदेशक
Head of Department	विभागाध्यक्ष
Hostel Warden	छात्रावास वार्डन
Income Tax Officer	आयकर अधिकारी
Indian Administrative Service	भारतीय प्रशासनिक सेवा
Indian Foreign Service	भारतीय विदेश सेवा
Regional Passport Office	प्रादेशिक पासपोर्ट कार्यालय
Research and Development Officer	अनुसंधान एवं विकास अधिकारी
Research Scholar	शोधक, शोध छात्र

प्रशासन शब्दावली

Abduction	अपहरण
Above mentioned	उपर्युक्त
Absence	अनुपस्थिति
Abolition	उन्मूलन
Abuse of Power	शक्ति का दुरूपयोग
Academic Leave	अकादमिक छुट्टी
Acceptance of Office	पद स्वीकृति
Accountability	जवाबदेही
Account Book	लेखा बही
Achievement	उपलब्धि
Acknowledgement	पावती
Acquire	अर्जन करना
Action Plan	कार्य योजना
Act of omission and commission	भूल चूक
Additional Charge	अतिरिक्त प्रभार
Appropriate Action	उचित कार्यवाही
Armed Forces	सशस्त्र बल
Arrear Statement	बकाया विवरण
As is Where is	जैसे है जहां हैं
Assessment Year	निर्धारण वर्ष
Atomic Power	परमाणु शक्ति
Attachment Order	कुर्की आदेश
Attendance Register	उपस्थिति रजिस्टर
Audit Objection	लेखापरीक्षा आपत्ति
Abduction	अपहरण
Balance Sheet	तुलन पत्र
Ballot Paper	मतपत्र
Bank Reconciliation	बैंक समाधान
Capital Grant	पूंजीगत अनुदान

राज कुमार

कार्यालय सहायक–ग्रेड २

साइबर–सुरक्षा का महत्त्व

प्रस्तावना :–

आज के आधुनिक युग में मानव ने नई नई ऊँचाइयों को छुआ है। मानव ने अपने जीवन को सरल , सुखद और सफल बनाने के लिये विज्ञान, कला, व्यवसाय, चिकित्सा आदि क्षेत्रों मे नई नई खोजें की हैं । इन नई–नई खोजों, विकास एवं निर्माण के कार्यों में कम्प्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी के महत्त्व को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है।

आज कम्प्यूटर हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है । अब तो ऐसा प्रतीत होता है कि कम्प्यूटर और इन्टरनेट के बिना कुछ भी संभव नहीं है । इनका उपयोग इतनी तेजी से बढ़ता जा रहा है कि हम इन माध्यमों पर निर्भर होते जा रहे हैं। इनका उपयोग अप्रत्यक्ष रूप से हर एक वर्ग के प्रत्येक क्षेत्र में दिखाई देता है । जैसे कि

– संचार	[Communication]	(ई मेल, मोबाइल फोन आदि)
– मनोरंजन	[Entertainment]	(डिजिटल मीडिया, एम पी ३)
– यातायात	[Transportation]	(मोटरकार सिस्टम, एयरप्लेन, नेविगेशन)
– खरीददारी	[Shopping]	(ऑनलाइन स्टोर, क्रेडिट कार्ड)
– चिकित्सा	[Medicine]	(मेडिकल रिकार्ड, उपकरण)
– शिक्षा	[Education]	(ऑनलाइन, अध्ययन मेटीरियल)
– व्यवसाय	[Business]	(इलेक्ट्रोनिक Transaction, Purchase order)
– बैंकिंग	[Banking]	(मशीन ऑनलाइन बैंकिंग)

उपरोक्त सभी क्षेत्रों से सम्बन्धित सूचनाएँ एवं सूचना प्रकिया या तो अपने कम्प्यूटर और इन्टरनेट के माध्यम से उपलब्ध होती है अथवा अन्य कम्प्यूटर सिस्टम के द्वारा होती है । आज तो जीवन की हर एक रोजमर्रा और ऑफिस की क्रियाओं में कम्प्यूटर का ही उपयोग होता है । सरकारी, गैरसरकारी और व्यक्तिगत संस्थाएं सभी अपना शासन, प्रबन्धन,व्यवसाय कम्प्यूटर और इन्टरनेट के द्वारा ही करते हैं ।

अतः वह प्रणाली जिसके द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी में सुरक्षा के मापदण्डों एवं तरीकों को, कम्प्यूटर और इन्टरनेट एवं उन पर संचित सूचनाओं की सुरक्षा के लिये सुनिश्चित किया जाता है। उस सुरक्षा प्रणाली को "साइबर सुरक्षा" कहा जाता है ।

साइबर सुरक्षा क्यों ?

कम्प्यूटर और इन्टरनेट के प्रत्येक उपभोक्ता के लिये साइबर सुरक्षा महत्त्वपूर्ण है क्योंकि उपभोक्ताओं को अपनी पहचान की सुरक्षा की आवश्यकता पड़ती है ।

सभी संस्थाओं को अपने व्यापार की अहम जानकारियों , वित्तीय सूचनाएँ एवं अति महत्त्वपूर्ण और संवेदनशील आँकड़ो की सुरक्षा की आवश्यकता होती है । आज सभी संस्थाएँ अपनी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ अधिकतर इन्टरनेट से जुड़े कम्प्यूटर पर संचित करते हैं । अतः सूचनाओं की सुनिश्चितता और सुरक्षा की परम आवश्यकता है ।

निम्नलिखित कारणों से साइबर सुरक्षा कमज़ोर नज़र आती है –

- एप्लीकेशन के गलत और कमज़ोर प्रशासन (Poor administration)
- कमज़ोर सॉफ्टवेयर कोडिंग (Poor software coding)

उपरोक्त कमज़ोर साइबर सुरक्षा के कारण हर एक को नुकसान सहना पड़ता है। जैसे कि मालवेयर (Malware) हमारे कम्प्यूटर में अनाधिकृत ढंग से प्रवेश कर संचित सूचनाओं को चुरा सकते हैं ।

- आपके कम्प्यूटर का उपयोग किसी अन्य कम्प्यूटरों पर साइबर आक्रमण (cyber attack) करने के लिये किया जा सकता है ।
- हमारे कम्प्यूटर पर उपस्थित क्रेडिट कार्ड से संबधित सूचनाओं को चोरी करके अनाधिकृत ढंग से अपने लिए खरीददारी (Shopping) कर सकता है ।

हम क्या कर सकते है ?

हम सभी कम्प्यूटर और इन्टरनेट उपभोक्ताओं को साइबर एथिक्स अर्थात इन्टरनेट के ऊपर ज़िम्मेदारी से व्यवहार करना चाहिए । जैसे कि हम जीवन में आम जिम्मेदारी का निर्वाह करते हैं । उदाहरण के तौर पर जो तुम्हारे लिये नहीं है उसे उपयोग मत करो और किसी को नुकसान न पहुंचाओ। इन सबके अतिरिक्त हमें साइबर सुरक्षा से सम्बन्धित सभी व्यक्ति, प्रकिया, संस्था, तत्त्व इत्यादि के बारे में जानकारी हो –

उदाहरण

1) Hacker Attacker:

ये उन व्यक्तियों को संज्ञा दी जाती है, जो साइबर एथिक्स को भूलकर अथवा नियमों का उल्लंघन कर दूसरों को नुकसान पहुँचाने का प्रयास करते हैं। Hackers अपने काम को अंजाम देने के लिये कम्प्यूटर और सॉफ्टवेअर सिस्टम की कमियों को खोजकर उनका उपयोग गलत ढंग से अपने लाभ अथवा दूसरों को नुकसान के मकसद से करते हैं ।

2) Malicious code/software:

इस वर्ग में virus , worms, trojen horse इत्यादि प्रोग्राम आते हैं । इन प्रोग्रामों को Hackers द्वारा किसी विशेष प्रकार के लक्ष्य को ध्यान में रखकर लिखा जाता है । हर एक प्रोग्राम के अपने विशेष गुण होते हैं ।

अर्थात वह प्रोग्राम अथवा सॉफ्टवेयर जिनका प्रयोग किसी को हानि पहुँचाने के लिये किया जाता है उन्हें Malicious software or code कहा जाता है ।

धर्मेन्द्र सिंह रघुवंशी
(सुरक्षा विश्लेषक)

विविध

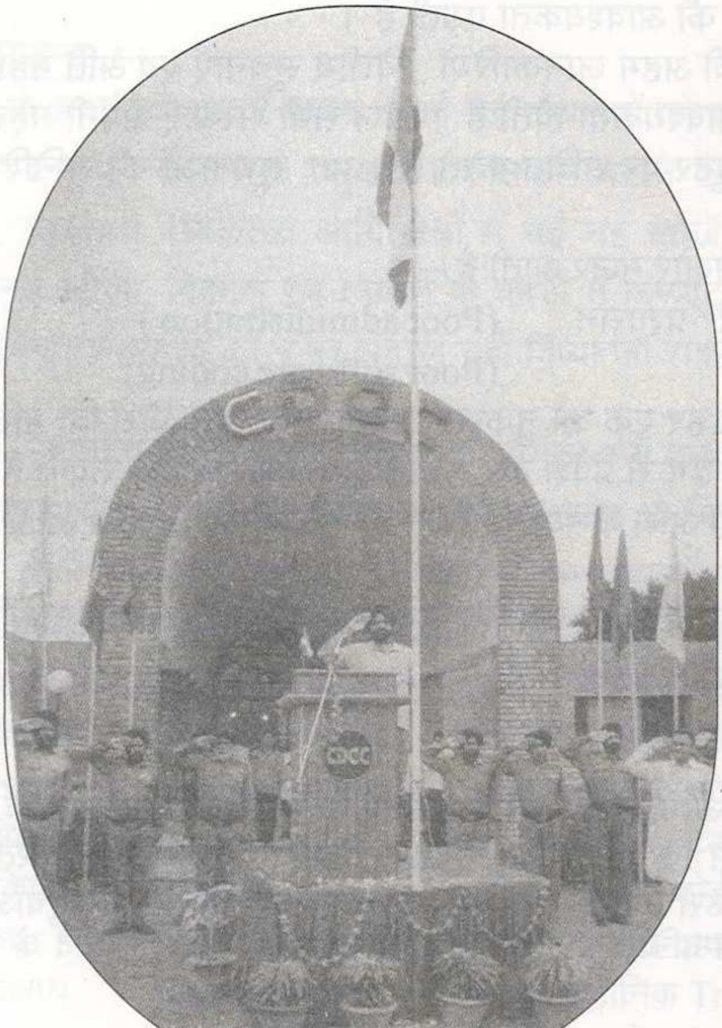

स्वतन्त्रता दिवस ध्वजारोहण

रक्तदान शिवर

कार्यकारी निदेशक श्री जगजीत सिंह भाटिया द्वारा वृक्षारोपण

लोहड़ी का त्योहार

अन्तर्राष्ट्रीय छात्रों का स्वागत

गतिविधियां

सीमा जैन सचिव द्वारा वी ओ एस एस सोफ्टवेयर का विमोचन

टेलीमेडीकोन सम्मेलन

राज्य मंत्री द्वारा दिल्ली में टेलीमेडीसन प्रयोजना का उद्घाटन

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

एलीटेक्स दिल्ली में भागीदारी

सामाजिक नेटवर्किंग

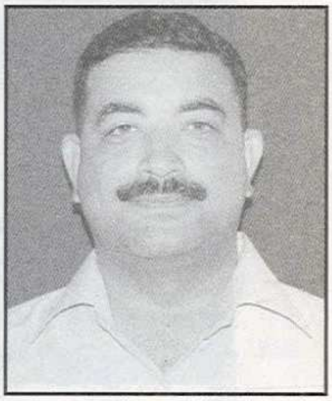

आज के युग में सूचना एवं प्रोद्यौगिकी के क्षेत्र में अकल्पनीय उत्थान हुआ है। इस दशक में इन्टरनेट पर काफी नई तकनीक से युक्त वेब साईटस का विकास हुआ है। वेब २.० में सामाजिक नेटवर्किंग पर आधारित वेब साईटस जैसे माईसपेस, फेसबुक, औरकुट, ट्विटर, लिंकाडिन आदि अवतरित हुई है ।

सामाजिक नेटवर्किंग साईटस के द्वारा आप अपने मित्रों व व्यवसायिक सम्बन्धियों से सीधे सम्पर्क साध सकते है । अपनी रूचि के आधार पर आप, विश्व में किसी भी व्यक्ति, जिसकी आप से समानता हो, सम्पर्क से अपनी कुशलता बढ़ा सकते हैं।

इन्टरनेट पर आधारित सामाजिक नेटवर्किंग साईटस आप को नया सिखने का अवसर भी प्रदान करती है। फेसबुक या औरकुट जैसी वैब साईटस के जरिए आप अपने जानकर व्यक्तियों से एक ही वक्त पर सूचना आदान–प्रदान कर सकते हो । पढ़ाई के सन्दर्भ में भी सामाजिक नेटवर्किंग का प्रयोग किया जा सकता है । अगर आप किसी प्राधायक के सामाजिक नेटवर्क का हिस्सा बनते है तो आप उसका प्रयोग अपनी पढ़ाई के लिए नई दिशा खोजने के लिए भी कर सकते है। ट्विटर के जरिए आप अपने विचार अपने सम्पर्क में आने वाले कई लोगों से बाँट सकते हो। सामाजिक नेटवर्किंग साईटस के जरिए हम सूचना पर आधारित सामाज की परिकल्पना कर सकते हैं।

सामाजिक नेटवर्किंग साईटों के माध्यम से हम कैरीयर सलाह, नौकरी के बारे में जानकारी, चिकित्सक से परामर्श व पर्यटन के क्षेत्र में भी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। अमेरिका के वर्तमान राष्ट्रपति बराक ओबामा ने भी सामाजिक नेटवर्किंग साईटस के जरिए एक पारदर्शी चुनाव अभियान चलाया जो सर्वविदित है ।

आज मीडिया से जुड़े लोग भी ट्विटर जैसी सामाजिक वैब साईटस के जरिए ऑनलाइन उपयोगकर्ताओं तक तात्कालिक समाचार पहुँचाते हैं। लिंकाडिन जैसी वैबसाईटस व्यवसायिक व प्रोफेशनल लोगों की पहली पसन्द है। निस्संदेह वेब २.० में सामाजिक नेटवर्किंग वैब साईटस के माध्यम से क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए हैं। यह वैबसाईटस कई टूलस उपलब्ध करवाती है जिनके जरिए आप अपनी जरूरत के अनुरूप बना सकते हैं। सामाजिक नेटवर्किंग वैबसाईटस आपके मोबाइल फोन पर भी सामान्य रूप में कार्य करती है जिसकी वजह से आप सुविधा पूर्वक इनका इस्तेमाल कर सकते हैं। कुछ सावधानियों का इस्तेमाल करके आप अपने खाते को काफी सुरक्षित बना सकते हैं और गोपनीयता निर्धारित कर सकते हैं ।

चेतन मनचंदा
मल्टीमीडिया

सत्य तथ्य

- पेंग्विन एक ऐसा पक्षी है जो तैर तो सकता है, पर उड़ नहीं सकता ।
- डॉल्फिन मछली एक आँख खुली रखकर सोती है ।
- मनुष्य का दिल एक दिन में लगभग १ लाख बार धड़कता है ।
- बिजली की कुर्सी का आविष्कार एक दंत चिकित्सक ने किया था ।
- दुनिया के लगभग आधे अखबार अकेले अमेरिका और कनाडा में प्रकाशित होते है।
- एक वायलिन बनाने में लकडी के ७० विभिन्न आकार के टुकड़े लगते हैं ।
- आकाशीय बिजली कड़कने से जो तापमान पैदा होता है वह सूर्य की सतह पर पाए जाने वाले तापमान से पाँच गुना ज्यादा होता है ।
- जब काँच टूटता है तो इसके टुकड़े ३००० मील प्रति घंटा की गति से छिटकते हैं।
- १६ वीं सदी आने तक साइबेरिया में चाय के चौकोर टुकड़ों को मुद्रा के रूप में प्रयोग किया जाता था ।
- मनुष्य शरीर में हर सेकेण्ड १५ मिलियन लाल रक्त कणिकाएँ पैदा होती है और मरती हैं।
- सूर्य का द्रव्यमान पृथ्वी के द्रव्यमान से ३३०३३० गुणा ज्यादा है ।
- विनस (शुक्र ग्रह) दक्षिणावर्त दिशा (क्लाकवाइज़) परिक्रमा करता है जबकि बाकी ग्रह वामावर्ती (एन्टी कलाकवाइज़) दिशा में परिक्रमा करते हैं।
- आयतन और आकार के अनुसार , कैसपिअन सागर दुनिया की सबसे बडा सागर है जो कि यूरोप और पश्चिम एशिया के बीच स्थित है ।
- अफ्रीका में स्थित नील नदी दुनिया की सबसे बड़ी नदी है । इसका विस्तार ४१६० मील (या ६६६५ किलोमीटर) है ।
- कॉकरोच सिर कटने के बाद भी कई सप्ताह तक जिंदा रह सकता है। दर असल वह सिर कटने से नही, भूख से मरता है ।

प्रीतिका खेरा
परियोजना सहयोगी

महत्वपूर्ण अविष्कार

	आविष्कार का नाम	आविष्कारक का नाम	वर्ष
❖	एल्कोहल थर्मामीटर	डैनियल गैबरियल फैरनहॉइट	१७०९
❖	मरकरी थर्मामीटर	डैनियल गैबरियल फैरनहॉइट	१७१४
❖	सैलसियस थर्मामीटर	सैलसियस एंडर्स	१७४२
❖	रूडीमेंटरी थर्मामीटर	गैलेलियो गैलिली	१५९३
❖	खगोलीय दूरदर्षक	गैलेलियो गैलिली	१६०९
❖	बैरोमीटर	इव्हांगेलिस्टा टोर्रिसेली	१६४४
❖	पेंडुलम घडी	किष्चन हाइजेन्स	१६५६
❖	गुरूत्वाकर्षण का सिद्धांत	सर आइजेक न्यूटन	१६६५
❖	प्रकाश का वेग	ओलाउस रोमर	१६७५
❖	गति के नियम	सर आइजेक न्यूटन	१६८७
❖	मशीनगन	जेम्स पक्ले	१७१८
❖	बाइफोकल लैंस	बेंजामिन फ्रैंकलिन	१७६०
❖	पैराशूट	लुइस सिबेसटिअन लेनोमार्ड	१७८३
❖	सैलोफेन टेप	रिचर्ड गुरलेय ड्रियू	१९३०
❖	एअरप्लेन	विल्बर राईट और ऑरविल राईट	१९०३
❖	विंडशील्ड वाइपर	मेरी एडंरसन	१९०३
❖	एनीमोमीटर	लिओन बेटिस्टा एल्बर्टी	१४५०
❖	मैकेनिकल टेलीविजन विद		
	मूविंग इमेज	जॉन लॉजी बेअर्ड	१९२६
❖	बैकेलाइट	डा. लियो हेनड्रिक बेकलैंड	१९०७
❖	बॉल पेन विद विसकस	लेजलो और जिआर्ज बिरो	१९३५
❖	बैंड–एड	अर्ल डिकसन	१९२०
❖	कैमिकल बैटरी	एलिसैंट्रो वोल्टा	१८००
❖	टेलीफोन	एलैक्जैंडर ग्राहम बेल	१८७६
❖	वर्ड वाइड वेब(एनक्वाइर)	बरनर्स –ली–टिम	१९५०
❖	वर्ल्ड बैंक डिपो	डॉ. चार्ल्स रिचर्ड ड्रियू	१९१
❖	ब्लू जींस	लेवी – स्टरॉस	१८५०

अनु कंबोज
सहायक परियोजना अधिकारी

सोच की प्रतिक्रिया

यह कहानी दक्षिण भारत के एक राजा और गोपीनाथ नामक एक चंदन लकड़ी के व्यापारी की है । राजा गोपीनाथ से अप्रसन्न रहता था और यह अप्रसन्नता दिन प्रतिदिन बढ़ती गयी और अन्ततः राजा की रातों की नींद भी गायब होने लगी । राजा ने अपने एक योग्य मंत्री को बुलाकर अपनी मनोस्थिति से अवगत कराते हुए कहा कि मैने चंदन व्यापारी गोपीनाथ को मृत्युदण्ड देने का निर्णय लिया है । मंत्री ने वजह जाननी चाही तो राजा ने कहा कि वजह तो मुझे भी नहीं पता है बस गोपीनाथ को देखते ही उसे मार डालने की इच्छा होती है और मन बेचैन हो जाता है । राजा ने मंत्री से कहा कि गोपीनाथ का सीधा कोई अपराध नहीं है और गोपीनाथ से कभी कोई वार्तालाप भी नहीं हुआ है ।

मंत्री ने इस बात की तह तक जाने का निर्णय लिया और राजा से मृत्युदण्ड का निर्णय कुछ दिन के लिए स्थगित करने का अनुरोध किया । इसके बाद मंत्री गोपीनाथ से मिलने पहुँचा और उससे सामान्य रूप से बातचीत करनी शुरू की । इस दौरान मंत्री को पता चला कि गोपीनाथ का व्यापार घाटे में चल रहा है चंदन के लकड़ियों की बिक्री बिल्कुल नहीं हो रही है और गोपीनाथ एक बड़े आर्थिक संकट से गुजर रहा है । मंत्री बड़ी दुविधा में पड़ गया , एक तो गोपीपाथ पहले ही समस्याओं से घिरा हुआ है और राजा भी उसे मृत्युदण्ड देना चाहता है। मंत्री ने निर्णय लिया कि वह गोपीनाथ को सच नहीं बताएगा । मंत्री ने गोपीनाथ से कहा कि राजा ने उसे गोपीनाथ की आर्थिक मदद करने के लिए भेजा है राजा गोपीनाथ का सारा चंदन खरीदकर उसकी मदद करना चाहते हैं । इतना सुनते ही गोपीनाथ फूट –फूट कर रोने लगा और फिर खुलने लगे सभी रहस्य । गोपीनाथ ने रोते हुए मंत्री को बताया कि बहुत दिनों से उसका चंदन का व्यवसाय घाटे में चल रहा था और उसके मन में बार – बार यह बात आती थी कि यदि राजा की मौत हो जाए तो राजा के अंतिम संस्कार के लिए उसकी चंदन की लकड़ियां बिक जायेगी । इस तरह गोपीनाथ अपने फायदे के लिए राजा की मृत्यु की कामना करता रहा ।

गोपीनाथ ने मंत्री से कहा कि मैं राजा से मिलकर अपने अपराध के लिये क्षमा मांगना चाहता हूँ । मंत्री ने गोपीनाथ से दुबारा मिलने का आश्वासन देकर विदा ली ।

मंत्री से कहा "मैं रात को अच्छी नींद सोया , अब मेरा मन शांत है । मैंने व्यर्थ ही गोपनीथ को मृत्यु दण्ड देने का सोचा था और अब मैंने फैसला किया है कि गोपीनाथ का सारा चंदन अच्छे मूल्य पर खरीदकर उसकी मदद की जाए ।"

इस कहानी का सारांश यह है कि जब तक चंदन व्यवसायी गोपीनाथ राजा की मृत्यु की कामना करता रहा, वह अनजाने में अपनी ही मृत्यु को आमन्त्रित करता रहा । उसकी इस सोच का सीधा प्रभाव राजा की सोच पर पड़ा और राजा ने गोपीनाथ को मृत्युदण्ड देने की सोची ।

दूसरी तरफ जैसे ही गोपीनाथ की सोच बदली और उसने राजा से क्षमा मांगने की सोची, उसका प्रभाव राजा की सोच पर पड़ा और राजा का मन द्रवित हुआ, और परिणाम स्वरूप राजा ने गोपीनाथ की मदद करने का निर्णय लिया । अतः हमें अपनी सोच सही और संतुलित रखनी चाहिए क्योंकि इसका प्रभाव निश्चित रूप से हमारे जीवन पर पड़ता है ।

शैलेश सिंह
अभिकल्प अभियन्ता

फलसफा ज़िंदगी का

ज़िंदगी क्या है? कल मुझे एक शराबी मिला और बताने लगा– ज़िंदगी तो एक नशा है जब चढ़ जाए तो दुनिया हसीन और खूबसूरत लगती है वरना एक उदास सिलसिला है।

हाँ, सही बोल रहे हो मियाँ । मैंने भी देखे हैं बहुत से लोग अहातों आजकल चण्डीगढ में जिसे "टेवरन" कहते हैं के आसपास, कोई नाली में तो कोई खड्डे में हसीन और खूबसूरती के पलों को ढूँढते हुए । कुछ तुम जैसों को तो गली के स्वान जगाने की कोशिश कर रहे होते हैं, अपनी एक टाँग उठा कर । मगर शायद वे उन पलों में इतने खो चुके होते हैं कि कुत्तों की कोशिश भी बेकार चली जाती है या उन हसीन पलों से बाहर आने का उनका मन नहीं करता । सुबह होते ही वे रात के राजा रंक बन जाते हैं अपनी जेब देख कर । फिर वही सिलसिला उदासी का छा जाता है मगर शायद अगली शाम तक।

मज़दूर से पूछा ज़िंदगी क्या है ? वह बोला –पता नहीं साहिब ज़िंदगी–जुन्दगी का । हम तो सुबह ही मज़दूरी के लिए निकल जाते हैं, और शाम तक चार पैसा कमा कर घर अपनी बीवी–बच्चों संग आराम से सो जाते हैं ।

भाई ये भी कोई ज़िंदगी है – गधे जैसी – कोई मनोरंजन नही, कोई मज़ा नहीं ।

साहिब मनोरंजन मज़ा है ना ......बताया तो.... अपनी बीवी संग सोने का ।

हाँ भई, दिखता है मनोरंजन का नतीजा भी ७–८ बच्चे देश पर बोझ ।

जिस को भी पूछो–हर एक का अपना ही फलसफा है ज़िंदगी का । हर एक का अपना तजुर्बा है, अपनी कहानी। और हर कहानी का अंत भी फिक्स है । एक शायर याद आता है

"कैदे हयात बन्दोगम दोनो असल में एक हैं
मौत से पहले आदमी इनसे निजात पाए क्यों"

जिस्म तो लहू और गोश्त की मशीन है । चेतना इस मशीन से उत्पन्न गति है । मशीन तो एक दिन घिस जायेगी । घिसी मशीन चलेगी तो लडखड़ाती हुई । उसका क्या गम? ज़िंदगी का मोह तो मज़े के लिए ही है । ज़िंदगी तमाशा है न । हर तमाशे का खात्मा जरूरी है । तमाशा खत्म हो जाए तो कौन बैठा रहता है । ऐसे ही रूह भी उड़ कर चल देती है ।

"काधो पे है जनाजा तो मुल्के अदम में रूह
कोसों निकल गया है ज्यादा सवेरे से ।"

शशि कुमार गोस्वामी
सहायक प्रशासनिक अधिकारी

LIBRARY
16/9/10
Centre for Development Of Advanced Computing

ओबामा को नोबेल.... बापू मुस्करा रहे हैं।

कल रात मेरे सपने में बापू आए .... पता नहीं क्यों आए । आना तो बराक ओबामा को चाहिए था । शाम से लेकर देर रात तक उन्हीं की चर्चा थी और खबर भी उन्हीं की बनाई थी । वही नोबेल वाली.... और खबर के बाद तो नोबेल वालों को कोसते भी रहे थे। पता नही बराक में एक साल में क्या नजर आ गया ....दे दिया शान्ति का सबसे बड़ा पुरस्कार उन्हें फलां –फलां। इसी खीझ के साथ नींद भी आ गई थी लेकिन पता नहीं क्यों सपने में बराक नही आए, बापू आ गए ।

बापू मुस्करा रहे थे । एक ज़िद्दी बच्चे की तरह उनकी मुस्कराहट से मुझे खीझ हो रही थी । लेकिन वह मुस्कराए जा रहे थे ।

मैंने खीझकर कहा ....
क्यों बापू तुम मुस्कराए जा रहे हो .... तुम्हें पता है बराक ओबामा को नोबेल मिला है । नोबेल.... बापू.. नोबेल ! शांति का नोबेल .... शांति के लिए दुनिया का सबसे बड़ा पुरस्कार .... मैंने बापू के चेहरे की तरफ हैरत भरी नजरों से देखते हुए कहा । लगा बापू जरूर कुछ कहेंगे। बापू अभी भी पहले की तरह मुस्करा रहे थे । मेरी खीझ बढ़ती जा रही थी ।

तुम बहुत बदल गए बापू । खुश हो रहे हो ना .... देखो ओबामा की चमड़ी और हमारी चमड़ी का रंग एक ही है ....
तो नोबेल तो अपनी नस्ल वाले को ही मिला ना । अंग्रेज यहां भी हार गए । क्या बापू ....तुम भी अब ऐसा सोचने लगे । तुम्हारे चेहरे की खुशी तो यही कह रही है बापू । बोलो बोलो ....यही बात है ना ? मेरी आंखे जवाब के इंतजार में बापू के चेहरे पर जा टिकी ।
लेकिन यह क्या ? बापू के चेहरे पर वही निश्छल मुस्कराहट .... इस बार कुछ और चौड़ी !

मुझे बापू की यह मुस्कराहट काटने को दौड रही है । लग रहा था मेरा यह आरोप बापू को बेचैन कर देगा और नोबेल को लेकर मेरे साए के साथ –साथ वह अपने शब्द भी जोड़ेंगे ....लेकिन बापू है कि मुस्कराए जा रहे हैं ।

मेरा सब्र जवाब दे रहा है । इस बार गुस्ताखी की हद तक जा पहुंचता हूँ.....

कैसे इंसान हो बापू .... क्या तुम्हें गुस्सा नहीं आता ! सारी जिंदगी गुज़ार दी अहिंसा के रास्ते पर .... आखिर में सीने पर गोली भी खाई । फिर भी जो अवार्ड आज तक तुम्हें नहीं मिला, वह ओबामा को मिल गया.... जलन नहीं होती.... कोफ्त नही होती.... नोबेल वालों को गालियां देने को मन नहीं करता .... बोलो बापू .... बोलो.....

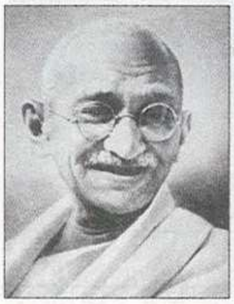

इस बार मैं बड़ा आहत हूँ । बापू पर सवाल का ब्रह्मास्त्र जो छोड़ चुकी हूँ। जवाब तो मिलेगा ही। अब मेरे चेहरे पर भी मुस्कान है, लेकिन बापू वाली नहीं। मेरी नजरें फिर बापू के चेहरे पर जा टिकी हैं ।

लेकिन हे भगवान यह क्या ?यह इंसान तो मुस्कराए जा रहा है। मेरा सिर फटने को है..... यह इंसान है या ...कोई जलन नहीं, कोई बैर नहीं .... ।

तुम इसी लायक थे बापू । तुम्हें दुनिया का या सबसे बड़ा शांति पुरस्कार कभी मिल ही नहीं सकता था । हम तो यूँ ही तुम्हारे लिये नोबेल वालों को कोसते रहते हैं। मैं बेहद गुस्से में बापू से कहती हूँ ।

....लेकिन बापू अभी भी मुस्काए जा रहे हैं । मैंने बापू से नजरें हटाकर उनकी तरफ पीठ कर ली है। अचानक बापू की आवाज मेरे कानों में गूंजती है और अलार्म की आवाज मेरी नींद तोड़ देती है .... कमबख्त इसको भी अभी बजना था। मैं ऑफिस के लिए तैयार होने लगती हूँ। ..... बापू की मुस्कराहट मेरे आँखों के सामने अभी भी तैर रही है ... लेकिन मेरी उलझन बरकरार है ... आखिर ओबामा को नोबेल पर क्या कहना चाहते थे बापू? क्या आप मुझे बता सकते हैं ?

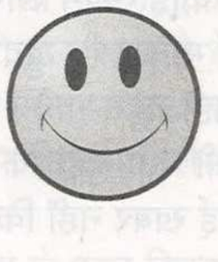

सुषमा कौशल
सहायक

सहयोगी एवं प्रोत्साहित व्यवसायिक वातावरण

उपरोक्त कथन से मैं समझता हूँ कि हर एक मनुष्य सहमत होगा कि एक घड़ी तब ही सुचारू रूप से चलेगी अगर उसका हर एक पुर्जा भली भांति काम कर रहा है चाहे वो कितना भी बड़ा पुर्जा या बिल्कुल किनारे की छोटी सी गरारी ही क्यों न हो। अगर बड़ी गरारी समझे कि घड़ी तो बस मेरे उसका तो कोई महत्त्व नहीं है तो यह कथन तब गलत साबित होगा जब वह छोटी सी गरारी काम करना बन्द कर देगी और घड़ी रुक जाएगी।

एक प्रफुल्लित विकासशील संगठन भी बिल्कुल उपरोक्त उदाहरण की तरह है। किसी भी संगठन में हर एक कर्मचारी का अपने क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण स्थान होता है, चाहे कोई ऊँची पदवी पर कार्यरत हो या कोई सफाई कर्मचारी इत्यादि। एक अच्छे संगठन की गणना तभी अच्छी मानी जाती है यदि हर एक कर्मचारी अपने क्षेत्र में रह कर अपना कार्य सुचारु रूप से करे और हर कर्मचारी अपने कार्य क्षेत्र से खुश हो। तभी वह संगठन एक विकसित संगठन कहलाता है।

आज के मनुष्य की अवस्था कुछ और ही है वह अपने आप को सर्वश्रेष्ठ मानता है और दूसरों को हीन। एक इंसान दूसरे इंसान को कहता है कि हम दोनों ही फूल हैं तो दूसरा इंसान इस पर खुश होता है तो पहला इंसान कहता है कि पूरी बात तो सुन ले, मैं तो हिन्दी का फूल हूँ और तू इंग्लिश का फूल है। कहने का भाव हर कोई अपने आपको दूसरों से उत्तम ही मानता है थोड़ी ताकत मिल जाए तो अपने आप को खुदा मानता है, खुदगर्ज़ी और अभिमान से जीता है, लालच में आकर धन इकट्ठा करने के लिए पता नहीं कौन–कौन से गलत तरीके अपनाता है, एक कहावत आती है फसमान सौ बरस का, पल का भी पता नहीं कि धन इकट्ठा करने के लिए यह सब क्यों कर रहा है, जबकि अगले पल की तुझे कोई खबर नहीं कि तेरा स्वास आएगा या नहीं। इंसान अन्दर से कुछ और व बाहर से कुछ और होता है।

कहने का तात्पर्य कि इंसान विन्रम होकर अंदर और बाहर से एक स्वरूप दूसरों को प्राथमिकता देकर बिना किसी निजी स्वार्थ के कार्य करे और सब को मिल–जुल कर साथ लेकर चले तभी वह संगठन दिन दुगनी व रात चौगुनी तरक्की कर सकता है।

दलजीत सिंह जौली
प्रशासनिक अधिकारी

मन की सुन्दरता

एक शिष्य ने गुरू से प्रश्न किया – गुरूदेव ! मन की सुन्दरता क्या है ? गुरू ने शिष्य से कहा "वत्स , मैं तुम्हें एक किस्सा सुनाता हूँ । तुम्हें अपने प्रश्न का उत्तर स्वयं ही मिल जाएगा ।"

हिमाचल प्रदेश के पहाड़ों की तलहटी में एक गाँव में छोटा सा परिवार था– माँ–बेटे का। माँ–बेटे का फूलों का बगीचा था । माँ दिन भर मेहनत से बगीचे की देख–रेख करती। उसका बगीचा सुन्दर फूलों से भरा रहता और उसका बेटा उन सुन्दर व सुगन्धित फूलों को दूर शहर में जाकर बेच देता । फूल हाथों –हाथ बिक जाते थे । इससे उन्हें अच्छा लाभ होता । लेकिन समय के आगे किसी की नहीं चलती ।

एक दिन सुबह जब अमन की माँ की नींद खुली तो उसका शरीर ज्वर से तप रहा था । बेटे ने जब माँ को ऐसी स्थिति में देखा तो पास के छोटे से अस्पताल से डाक्टर को बुलाया। डाक्टर ने माँ को आराम करने की हिदायत दी । माँ को बगीचे की चिन्ता होने लगी । बेटे को समझाया कि बगीचे में पौधों को पानी अवश्य देना और भी कई निर्देश दिए ।

कुछ दिनों के बाद माँ कुछ ठीक हुई तो अमन से बोली कि मेरी पौधों को देखने की बहुत इच्छा हो रही है। एक नजर देख लूं तो चैन मिल जाएगा । माँ की जिद्द के आगे अमन को हार माननी पडी ।अमन बहुत घबराया हुआ था ।

माँ ने जैसे ही बगीचे की ओर नजर दौड़ाई तो दिल धक्क से रह गया । सारे पौधे मुरझा चुके थे । अमन ने आँखें नीची करते हुए कहा," माँ मैं रोज एक –एक पत्ते को पानी से धोता था लेकिन पता नहीं ये कैसे मुरझा गए ?" माँ को सारी बात समझते देर न लगी । बोली," बेटा तुमसे एक भूल हुई । पत्तों को पानी से धोने से उन पर सुन्दर फूल नहीं लगते । पौधों की जड़ों में पानी देना आवश्यक है । जब तक उसकी जड़ों को पानी नहीं मिलेगा , पौधा फलता– फूलता नहीं । उस पर सुन्दर फूल नही लगेंगे ।

किस्सा सुनाने के बाद गुरू ने शिष्य से प्रश्न किया, "वत्स! क्या तुम्हें प्रश्न का उतर मिला ? शिष्य ने कहा – हाँ गुरुदेव ! मैं समझ गया । जिस प्रकार पौधे की जड़ में पानी देने से वह सुन्दर, हरा–भरा व फूलों से लदा दिखाई देता है, उसी प्रकार जब तक हमारा मन, हमारी आत्मा को सुन्दर नहीं बनाया जाएगा तो हमारा व्यवहार कैसे सुन्दर होगा ?" गुरूदेव बोले," यही मन की सुन्दरता है । किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व मे तभी निखार आता है जब उसका मन स्वच्छ हो । बाहरी स्वच्छता से व्यक्तित्व सुन्दर नही बन सकता ।"

अनु आहुजा
लाइब्रेरियन

सबकी कहानी मेरी जुबानी

आज हम २१वीं सदी की ओर जा रहे हैं। इन्सान ने चाँद पर पहुँच कर यह साबित कर दिया है कि वह कुछ भी करने की हिम्मत रखता है लेकिन क्या वही इन्सान आने वाले समय में एक ऐसे समाज की स्थापना कर पाएगा जिस में किसी के साथ कोई भेदभाव नही किया जाएगा, जैसे :–

- क्या कभी ऐसा समय आएगा, जब काम करने वाले व्यक्ति को समाज में वह स्थान मिल पाएगा जो एक अफसर की जी–हजूरी करने वाले को प्राप्त है ?
- उस देश का क्या भविष्य होगा जिस में एम.फिल, पी.एच.डी. करने वाला व्यक्ति सरकारी नौकरी प्राप्त करने के लिए सेवादार / क्लर्क बनने को तैयार है ? क्या उसे उस की योग्यता के आधार पर पद प्राप्त नहीं होगा ? अगर ऐसे ही इतना पढ–लिख कर सेवादार / क्लर्क लगेंगे तो उच्च पद की क्या योग्यता रह जायेगी ? क्या कभी ऐसा समय आएगा, जब ससुराल में लड़की को ज़िंदा जला कर या उसे खुदकुशी करने के लिये मजबूर नहीं किया जाएगा ? कभी लड़की का ससुराल उस का मायका बन पायेगा ?
- एक तरफ जहां माँ– बाप बच्चों को पढ़ाने के लिए अपनी पूरी जमा–पूंजी लगा देते हैं , वहीं वे कभी पीछे नहीं हटते, चाहे खुद खाना न खाएं पर बच्चों को कभी भूखा नहीं सुलाते तो जब बच्चों पर ज़िम्मेदारी आती है, वह भी कुछ सालों की ही होती है, तो बच्चे क्यों अपनी ज़िम्मेदारी उठाने से पीछे भागते है जबकि माँ–बाप तो बच्चों से सिर्फ प्यार की उम्मीद करते है, वो भी बच्चे अपने माँ–बाप को नहीं दे सकते और उन्हें घर से निकाल देते हैं और उन्हें वृद्ध आश्रम में पहुंचा देते हैं। क्या कभी ऐसा समय आयेगा जब कोई वृद्धाश्रम नहीं होगा ?
- क्या उस व्यक्ति को, जिस के पास योग्यता, काम करने की लगन है लेकिन रिश्वत देने के लिये पैसा नहीं, उसे उस की योग्यता के आधार पर नौकरी प्राप्त होगी ? अगर पैसा देकर या सिफारिश के आधार पर ही नौकरी प्राप्त होती रहेगी तो उन लोगों का क्या होगा जो काम करना चाहते हैं? आखिर उनका क्या भविष्य होगा? अगर उन लोगों को ऐसे ही दुत्कारा जाएगा तो उनके अन्दर जो काम करने की लग्न और योग्यता है, कहीं वह कोई और रास्ता न अपना ले जो इस समाज के लिए हानिकारक हो ।

आज हर आम आदमी इन सवालों के जवाब चाहता है, क्या उसे उसके सवालों के जवाब प्राप्त होंगे ?

बलबीर कौर
पुस्तकालय सहायक

एक सवाल–खुद से

कुछ साल पहले की बात है । मैं त्रिवेंद्रम हवाई अड्डे पर अपनी फ्लाइट की इंतजार में बैठा था । थोड़ी दूर पर एक सैलानी (विदेशी) लड़की बैठी थी । ज्यादा भीड़ नहीं थी । मेरे दिल में यह इच्छा उठी कि इससे बात करूं। मैंने हैलो की और हमारी बातचीत का सिलसिला शुरू हो गया ।

थोड़ी देर बाद जब हम बातचीत करने में थोड़ा खुल चुके थे तब उसने एक सवाल किया । सवाल था "आप लोग इतने cruel (निर्दयी) क्यों हो ?" मैंने सवाल सुना । थोड़ा सोचा तो मेरी अंतरात्मा में पहला प्रश्न यह था कि क्या हम वाकई निर्दयी हैं ? हम लोग तो बहुत धार्मिक, अच्छी बातें करने वाले लोग हैं ...कम से कम ऐसा हम लोग कहते रहते हैं । पर मुझे उसके सवाल में सच्चाई दिख रही थी । फिर भी मैंने नाटक करते हुए उससे पूछा कि आपने ऐसा कैसे सोच लिया कि हम लोग निर्दयी हैं । उसने जवाब में कहा कि यहाँ आप लोग अपनी बहुओं, बेटियों को मार डालते हैं । जान से तो हमारे यहाँ भी लोग मार देते हैं मगर गोली से। गोली मारी और बात खत्म । पर आप लोग ! आप लोग तो अपनी बहुओं बेटियों को जला देते हैं, अंग काट देते है, तंदूर में फेंक देते हैं ... हाय कितना दर्दनाक और क्रूर है यह सब । और उसने फिर दोहराया –आखिर क्यों है ऐसा? मैं सोचने पर मजबूर था । जो उसने कहा वह सच था। शर्मा तंदूर काँड ताजा– ताजा था । और उसने भी अखबारों में पढ़ा था । मेरे दिल में आ रहा था कि मैं अपनी सभ्यता और विरासत के बचाव पक्ष में कुछ कहूँ। पर उसका सवाल सही लग रहा था । कुछ ठीक से समझ नही आ रहा था कि वाकई हम लोग इतने क्रूर क्यों हैं । मुझे जवाब ढूंढने में परेशानी हो रही थी । थोड़ा–सा और सोचने और मंथन करने के बाद मुझे कंस मामा का अत्याचार और द्रोपदी का चीर हरण भी सामने दिखने लगा । मुझे लगने लगा कि शायद कमज़ोर के प्रति अत्याचार कहीं हमारी विरासत का हिस्सा ही न हो। और शायद इसे हम देख ही नहीं पाते हैं । पर ऐसा क्यों कि इस लड़की को दिख गया और मुझे कभी सूझा भी नहीं । मैंने जो जवाब दिया वह कुछ–कुछ ऐसा था हमारी सभ्यता बहुत पुरानी है । हम सदियों से मरते–मारते चले आ रहे हैं। लिहाज़ा हमारी संवेदना अब कम हो गई है । शायद जितनी सभ्यता पुरानी होती है, उसकी संवेदना उतनी ही कम हो जाती है । दिखाने के लिए हम कहते कुछ उलटा हैं – जैसे औरतों की, लडकियों की देवियां कह कर पूजा करने के हमारे यहां बाकायदा त्योहार हैं पर वास्तविकता में हम सदियों से क्रूर ही थे और हैं। । रोमन चाइनीज सभ्यताओं का उदाहरण देकर यह कोशिश तो की कि हमारी क्रूरता अनोखी नहीं है । वो भी क्रूर थे । पर इस सवाल का असली जबाब मैं अब तक नहीं ढूँढ पाया हूँ ।

रजिन्द्र सिंह बटु
परामर्शी

अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन

इक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन,
इक फाइव स्टार होटल
दोनों का नज़दीकी रिश्ता
अपनी तूती,, अपनी शान
उद्‌घाटन के लिए,
नेता का छोटा सा अरमान
कार्यक्रम शुरू हुआ
सबने उसी बात को
अपने तरीके से फरमाया
वन्दना हुई, दीप जले
सबने झुक झुक कर, मंत्री से फीता कटवाया

फिर शुरू हुआ भाषणों का दौर
विदेशी भारतीय का रहा काफी जोर
सभी ने किया अपनी भारत मां को याद
जो जितना अमीर था, उसकी थी उतनी ही बडी फरियाद

अमीरों ने गरीबी हटाने में कई मंत्र कहे
हम भी लाचार से, उनको सुनते रहे
भाषण के बाद देर तक बजती रही ताली
हमसे भी देश का दर्द सहा ना गया
हमने भी कर दिये सरकारी खर्चे के चार पैग खाली

देश की तरह हमारे भी पैर लडखडाए
बुद्धिजीवियों की तरह, हम भी थे देश प्रेम के सताए
हमने भी तकरीर लगाई और दे डाली कौम को भारी सी गाली
हमको नशे में देख, माहौल में गर्मी आई
दोस्तों ने घर पहुँचाने के लिए, इक टैक्सी मंगाई
सुबह होश मे आकर रोज की तरह हमने जोत जलाई
मन ही मन ज्यादा न पीने की छोटी सी कसम खाई
बेरोज़गारी से जूझने की इक नई तरकीब नज़र आई

सम्मेलनों में जाएंगे,
कोट पहन, पढ़े लिखे दिख कर
हर विषय पर ताली बजाएंगे,
बिना समझे भी, गर्दन हिलाएंगे
और जब तक काम नही मिलता है
अपने खाने,पीने की समस्या,
यूँ ही सम्मेलनों में सुलझाएँगे ।

रजिन्द्र सिंह बटु
परामर्शी

आओ मिलकर प्रदूषण घटायें

आओ मिलकर प्रदूषण घटायें
हरा भरा यह देश बनायें
वातावरण को स्वच्छ बनाकर
इस जीवन का स्वस्थ बनायें।

जंगल न अब जलने पायें
न ही पहाड़ अब घटने पायें
मिलकर हम सब कसम यह खायें
जन जीवन की उम्र बढ़ायें।

इठलाती, बलखाती नदियाँ
सागर में सम्मिलित हो जायें
फल फूलों से सजी हो धरती
पंछी मधुर संगीत सुनायें।

आओ मिलकर यह प्रण उठायें
जीवन में परिवर्तन लायें
सृष्टि की हर सर्जना को
विसर्जन से हम बचायें।

वायु प्रदूषण को संतुलित कर
रितुओं के कम को सही बनायें
पतझड़ में बिखरे पत्तों को
जलायें नहीं हम दफनायें।

शहर की तंग गलियारों को तोड़
पेड़–पौधों की जगह बनायें
खुली हवा में सांस लें
जीवन में हम संतुष्टि पायें।

उन्नति विकास की राह पकड़े
पर मानव जीवन को संतुलित बनायें
पृथ्वी का परिवर्तन छोड़ कर
स्व–जीवन में परिवर्तन लायें।

किताबी उपचारण से बाहर निकलकर
कम से कम एक पेड़ लगायें
पल पल बढ़ते प्रदूषण पर
आओ मिलकर रोक लगायें।

फल–फूलों से सजी इस धरती को
आओ हम और सजायें
आओं मिलकर प्रदूषण घटायें
हरा भरा यह देश बनायें।

प्रतिदिन की भाग–दौड़ में
ईंधन की खपत घटायें
कम दूरी पर पैदल चलकर
रोग–मुक्ती और तंदरुस्ती पायें।

सुनीत खेतरपाल
वरिष्ठ अभिकल्प अभियन्ता

मनशक्ति

नर है तू अगर, चल निडर डगर,
कर्त्तव्य मार्ग पर चलता जा।
जो पथ पर आए अगर मगर,
चल डगर डगर तू बढ़ता जा।।
है विश्वास सहारा तेरे साथ,
तब डर की कीमत क्या होगी।
निकल पड़ा जब पथ पर तू,
तो मंज़िल की दूरी क्या होगी ।।
जिस मातृभूमि पर जन्म लिया,
जिसने विश्व को ज्ञान दिया।
यदि तुमने मन में ठान लिया,
तो परिणाम की चिन्ता क्या होगी।
नर है तू अगर, चल निडर डगर,
लहरों सा बस बढ़ता जा, बस सरर–सरर

मत बैठ समझ कर मंज़िल तू
हो कर्त्तव्य मार्ग पर डट कर तू ।
उसे पड़ाव समझ कर के बढ़ जाना ,
घृणा, पाप, दुष्कर्म को छोड़,
सत्य, प्रेम, सत्कर्म में लग जाना ।।
मत कोस अपने भाग्य को तू,
न तो कायर से भिन्नता क्या होगी।
जिस वीर भूमि पर जन्म लिया,
उसकी तो प्रतिष्ठा कुछ होगी ।।

अब जाग अभी, मत सो जा तू,
बस प्राण प्रतिज्ञा ले ले तू
मत भटक कहीं तू इधर – उधर ।

नर है तू अगर, चल निडर डगर,
कर्त्तव्य मार्ग पर चलता जा ।
जो पथ पर आए अगर – मगर
चल डगर–डगर तू बढ़ता जा ।।

संतोष निवारी
परियोजना सहयोगी

महान विचार

1 भाषा वही जीवित और जागृत है, जो जनता का ठीक से प्रतिनिधित्व करे।

— **पी. मोहम्मद मुनीस**

2 राष्ट्रभाषा के बिना आज़ादी बेकार है। — **अरविन्द विद्यालंकार**

3 सभी भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक है तो वह है देवनागरी।

— **जस्टिस कृष्णास्वामी अय्यर**

4 हमारी देवनागरी लिपि दुनिया की सबसे वैज्ञानिक लिपि है।

— **पं राहुल सांकृत्यामन**

5 जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं, वह उन्नति नहीं कर सकता। — **डा॰ राजेन्द्र प्रसाद**

6 हिन्दी भारतीय संस्कृति की आत्मा है। — **कमला पति त्रिपाठी**

7 अहिन्दी भाषी प्रान्त के लोग भी सरलता से टूटी – फूटी हिन्दी बोल कर काम चल सकते हैं।

— **भूदेव मुखर्जी**

8 राष्ट्र भाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है। — **महात्मा गांधी**

9 मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्ज़त करता हूँ, पर मेरे देश में हिन्दी की इज्ज़त न हो, मैं सहन नहीं कर सकता। — **आचार्य विनोबा भावे**

संतोश तिवारी
परियोजना सहयोगी

विचित्र तथ्य

साल २०१० का फरवरी महीना देखिए । आखिरी दिन, यानि २८ फरवरी को रविवार का दिन है ।

अब आप ४/४ (४ अप्रैल), ६/६ (६ जून), ८/८ (८ अगस्त), और १०/१० (१० अक्तूबर) को देखें , सभी रविवार को है ।

९/५ (९ मई), ११/७ (११ जुलाई), ५/९ (५ सितम्बर), और ७/११ (७ नवम्बर) को भी इतवार है ।

अब आप किसी भी साल का कैलेंडर लें । फरवरी के आखिरी दिन का वार नोट करें । यही दिन ४/४, ६/६, ८/८, १०/१०, ९/५, ५/९, ११/७, और ७/११ को भी होगा ।

है न विचित्र तथ्य !

जरनैल सिंह
परियोजन प्रबन्धक

भगवान को भाता भक्ति भाव

मानव जीवन बड़ी मुशिकल से मिलता है । कहा जाता है कि चौरासी लाख योनियों के बाद ही मनुष्य जीवन नसीब होता है । मनुष्य जन्म के लिये देवी देवता भी तरसते हैं क्योंकि सन्त लोग कहते हैं कि अगर आत्मा और परमात्मा का मिलन होगा तो वह मनुष्य जन्म में ही सम्भव है। इस श्रेश्ट योनि को पाकर हम मनुष्यता को खोते जा रहे हैं । मानवीयता खत्म होती जा रही है । हम तमाम प्रकार के विशय विकारों से ग्रस्त होते जा रहे हैं । हालात ऐसे खराब हो गए हैं कि दूसरों की भावनाओं का खयाल करना तो दूर की बात, हम अपनों का दिल दुखाने से भी बाज नहीं आते।

धन संपदा और वैभव में हमें लगातार वृद्धि चाहिये। लालच इस प्रकार हावी हो चुका है कि हमें भले बुरे की कोई पहचान नहीं रही। भाई भाई को धोखा दे रहा है बेटा बजुर्ग माँ बाप को घर से खदेड़ने में कोई परहेज नही करता। मनुष्य में अगर मनुष्यता ही नही रही तो मानव और पशु में कोई फर्क नही रह जाएगा "मनुष्य रूपेण मृगाष चरन्ति"। आज हम विषय विकारों से ग्रस्त है मन पर कोई काबू नहीं है इच्छाएं हावी होती जा रही हैं। चाहे इन को पूरा करने में दूसरों का नुकसान क्यों न हो जाए लेकिन हमारा स्वार्थ सिद्ध होना चाहिये ।

मनुष्य योनि में जन्म लेने के मूल उद्देश्य को हम भूल चुके हैं । हमारा मूल उद्देश्य प्रभु भक्ति कर उसे पाना है । क्योंकि मानव जन्म का असली उद्देश्य ही प्रभु प्राप्ति है लेकिन यहाँ जन्म के बाद हम मोह माया के जाल में फँसते जा रहें हैं । संसारिक सुखों की प्राप्ति ही हम अपना उद्देश्य मान चुके हैं। परमात्मा को हम भूलते जा रहें हैं जो सच्चाई है असल है । यह भी भूल चुके हैं कि इस संसार में जो कुछ भी इकठ्ठा कर रहे हैं वह कुछ भी साथ नहीं जायेगा सब कुछ यहीं रह जाएगा । इन्सान संसार में जब आता है खाली हाथ आता है और खाली हाथ ही जाना पड़ेगा ।

संसारिक सुखों के लिये हमने अपना सारा समय नष्ट कर दिया और असली काम जो करना चाहिये था उसके लिये कुछ भी नहीं किया । यहां आने के बाद इन्सान एक दूसरे से नफरत बढ़ाता जाता है जबकि परमात्मा को खुश करने का रास्ता तो प्यार का मार्ग है जो बिल्कुल खत्म होता जा रहा है ।

हम परमात्मा को खुश करने के लिये उसी की दी हुई चीजों से प्रसन्न करने का प्रयास करते हैं। यह बिल्कुल नहीं सोचते कि ये सब तो उसी की देन है उसे इन चीजों की क्या इच्छा है जो उसे चाहिये वो देते नही उसे तो भक्ति भाव चाहिये , प्रेम चाहिये । आस्था, विश्वास और सच्चे भाव से अर्पित किये गए दो फूल ही उसकी कृपा पाने के लिये काफी हैं । अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिये हम उस सर्वशक्तिमान हस्ती को कुछ चढ़ावा देने का लालच देते हैं जो उसे नहीं चाहिये । इसके विपरित जो उसे चाहिये, जिसकी उसे वास्तव में जरूरत है उसका हमारे पास बिल्कुल अभाव है तथा भाव में भूखे भगवान से हम सौदा करते हैं । इसका उदाहरण श्रीकृष्ण भगवान ने दासी पुत्र विदुर के घर सादा खाना खाकर दिया था जबकि पाण्डवों व कौरवों के यहां अनेक प्रकार के व्यंजन बने हुए थे।

मोहन लाल
वित एवं लेखा अधिकारी

आई–टी पेशावरों के लिए स्वास्थ्य ज्ञान

जैसा कि हम जानते हैं, भारतीय संस्कृति तथा रीति रिवाज विश्व भर में अपनी ऐतिहासिक प्रसिद्धि, अपनी गणितीय तथा लौकिक शक्ति के कारण विश्व भर में अपनी प्रसिद्धि बनाये हुए हैं । इसी बात को मध्यनज़र रखते हुये भारतीय आई–टी पेशावरों के स्वास्थ्य सम्बन्धित पहलुओं पर विचार विमर्श करना आज की ज़रूरत है ।

आमतौर पर आईटी पेशावर को लम्बे समय तक कम्प्यूटर के सामने बैठ कर कार्य करना पड़ता है, इस कारण उन्हें गर्दन व पीठ पीड़ा, आंखों की समस्या, रक्त चाप तथा मधुमेह इत्यादि बीमारियों का सामना करना पड़ता है । इस तरह की बीमारियों के उपचार हेतु ध्यान देना जरूरी है ताकि हमारे आई–टी पेशावर अपने स्वास्थ्य की तरफ ध्यान देकर अपने आप को कार्य कुशल रख सकें । आई–टी वातावरण में इन बीमारियों का मूल उपचार आई–टी पेशावरों की जीवन शैली, उठने बैठने का तरीका तथा शारीरिक व्यायाम के ऊपर काफी निर्भर करता है । कम्प्यूटर सम्बन्धित बीमारियों, उनके कारण व उपचार पर निम्नलिखित चर्चा की जा सकती है :–

१) **तनाव युक्त बीमारी:–** (Repetive stress sickness) इस तनाव युक्त बीमारी से मासपेशियों, मानसिक शक्ति तथा नसों के ऊपर प्रभाव पड़ता है जिसका कारण कम्प्यूटर पर लम्बे समय तक कार्य करने से है। इसी कारण कलाई, हाथ, कंधे तथा गर्दन का ऊपरी हिस्सा प्रभावित होता है ।

उपचार :– लम्बे समय तक कम्प्यूटर पर कार्य करते हुए थोड़ी–थोड़ी देर के लिए अवकाश डालें अथवा कार्य विराम डालें । दिन में कई बार अपने हाथ, कलाई, पीठ तथा गर्दन को strech करें । इसी के साथ अपने की –बोर्ड, कम्प्यूटर टेबल की ऊँचाई तथा अपनी कुर्सी की स्थिति यथानुसार रखें । कम्प्यूटर कुर्सी के ऊपर बैठने का सही अन्दाज़ व तरीका एक और सही उपचार है ।

२) **पीठ दर्द:–** पीठ दर्द का मूल कारण गलत मुद्रा मे बैठने से है । इसी तरह अनुचित कुंजी पटल , टेबल ऊँचाई तथा कुर्सी लुमवाह भी इस बीमारी के अन्य कारण हैं ।

उपचार :– कम्प्यूटर कुर्सी, मेज तथा कुंजी पटल की आवश्यकता अनुसार ऊँचाई तथा कुर्सी पर आवश्यकतानुयार बैठने की सही मुद्राएँ इस बीमारी के मूल उपचार हैं

३) **आँख तनाव** :– एक लम्बे समय तक लगातार कम्प्यूटर के सामने बैठ कर कार्य करने से आँखों में जलन , सूखा पन, नमी एंव लालीपन तथा विजन में कठिनाई होना ।

उपचारः– कम्प्यूटर स्क्रीन की उचित दूरी, कमरे की सही रोशनी, स्क्रीन शेड का प्रयोग तथा समय समय पर आँखों में पानी के छींटे मार कर इस बीमारी का सामान्य उपचार किया जा सकता है ।

४) **रक्त चाप, मधुमेह, हृदय रोग और अन्य भारीरिक एवं मानसिक रोगः**– आमतौर पर लम्बे समय तक कार्य अवधि,तनावपूर्ण वातावरण अनुचित खान–पान तथा आगुणवता जीवन शैली इन बीमारियों के प्रमुख कारण हैं ।

उपचारः–योग एवं गुणवत्ता जीवन शैली इन शारीरिक एवं मानसिक बीमारियों का एक मात्र उपचार हैं । योग हमें परम सुख व आनन्द से रहने का सूक्ष्म रास्ता दिखाता है और साथ ही हमारा शारीरिक व मानसिक बल बनाए रखने में मदद करता है । आज के युग में खास तौर पर आई–टी पेशावरों के लिए योग एक जरूरत समझी जाने लगी है । योग द्वारा ही अपने स्वास्थ्य, मानसिक बल तथा आत्मा पर नियंत्रण रख सकते हैं, जो कि आई–टी जनशक्ति के विकास के लिए अत्यन्त जरूरी है । हमारा शरीर पांच तत्वों पर आधारित है जैसे कि जल ,वायु, हवा, आग तथा पृथ्वी । अपने शारीरिक व मानसिक संतुलन बनाए रखने के लिए इन पांचों तत्वों के बीच तालमेल बनाए रखना चाहिए और योग साधना इसके लिए एक मात्र प्रयास है । योग विशेषताओं के अनुसार योग के आठ अंग है ।

१) **यारनः**– उच्चस्तर बनाए रखने व सामाजिक के लिए उपयोगी

२) **नियम** :– आत्मिक विकास तथा सात्विक आचरण के लिए ।

३) **आसनः**– उठने बैठने की सही मुद्राएँ जोकि शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य प्रदान करती हैं ।

४) **प्राणायमः**– यह एक शुद्ध सांस लेने की प्रक्रिया है जोकि मन और हृदय को स्वस्थ रखती है ।

५) **प्रतिहार** :– यह प्रक्रिया हमारी पाँचों इन्द्रियों नाक, कान, आंख, जीभ और त्वचा को नियमित करने में मदद करती है ।

६) **धर्मा** :– धर्मा हमारे मन को एकाग्र बनाए रखने मे काफी उपयोगी है , जोकि मानव जाति के लिए आवश्यक है ।

७) **ध्यान**:– आज के इस तनाव पूर्ण वातावरण में ध्यान एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया मानी जा रही है । ध्यान हमारी सोचने की शक्ति तथा आन्तरिक और बाहरी तनाव से लड़ने का बल प्रदान करता है ।

८) **समाधि**:– समाधि भी एक तरह से ध्यान का एक हिस्सा है जोकि लम्बी अवधि के लिए लगाई जाती है । इसका ज्यादातर लाभ योगी–मुनियों को होता है । इसलिए समाधि आई – टी पेशावरों के लिए ज्यादा लाभकारी नहीं है । आई – टी पेशावरों के लिए ज्यादातर समय का अभाव रहता है । लेकिन उपरोक्त बीमारियों व उनके उपचारों से होने वाले लाभों को देखते हुए आई–टी पेशावरों को अपना स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए समयानुसार इनके उपायों की तरफ ध्यान देना चाहिए । अपने स्वास्थ्य के लिए अपने कार्यालय में भी उक्त आसन और व्यायाम कर सकते हैं ।

दीपक राणा
जन–सम्पर्क अधिकारी

प्रगत संगणन विकास केन्द्र
पुस्तकालय
LIBRARY
16/9/14
Centre for Development Of Advanced Computing

सी-डैक मोहाली, जन-शक्ति

प्रगत संगणन विकास केंद्र
पुस्तकालय
LIBRARY
16/9/16
Centre For Development Of Advanced Computing

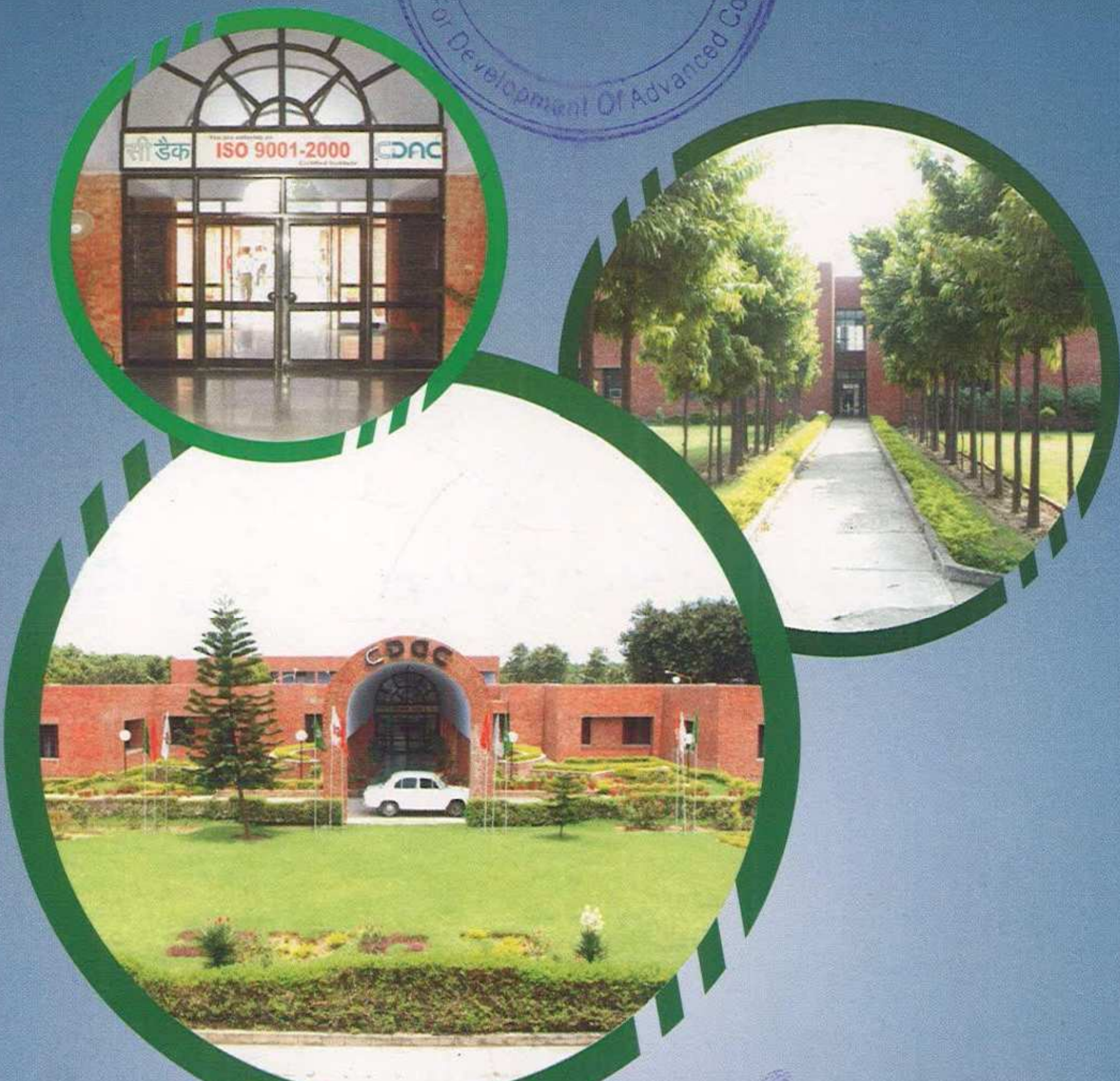

सी डैक
CDAC

प्रगत संगणन विकास केंद्र
CENTRE FOR DEVELOPMENT OF ADVANCED COMPUTING
A Scientific Society of the Ministry of Communications and Information Technology, Government of India
A-34, Industrial Area, Phase-VIII, Mohali - 160071, (Near Chandigarh) Punjab. INDIA.
Phone: +91-172-2237052-57 Fax: +91-172-2237050-51
Website: www.cdacmohali.in